अध्याय 14

अय्यूब का उत्तर
(भाग 3)

मनुष्य का थोड़ी देर का दुःखों से भरा जीवन (14:1-6)

1''मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दुःख से भरा रहता है। 2वह फूल के समान खिलता, फिर तोड़ा जाता है; वह छाया की रीति पर ढल जाता, और कहीं ठहरता नहीं। 3फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता है? क्या तू मुझे अपने साथ कचहरी में घसीटता है? 4अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है? कोई नहीं। 5मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं, और उसके महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है, और तू ने उसके लिये ऐसी सीमा बाँधी है जिसे वह पार नहीं कर सकता, 6इस कारण उससे अपना मुँह फेर ले कि वह आराम करे, जब तक कि वह मजदूर के समान अपना दिन पूरा न कर ले।''

आयत 1. तीन लघु वाक्यांश **जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दुःख से भरा रहता है** हमारी मानवीय सीमाओं की बात करते हैं।

आयत 2. फूल और **छाया** हमारे जीवनकाल का अच्छा वर्णन करते हैं। दोनों रूपक जीवन के थोड़ी देर के होने का वर्णन करने के लिए पवित्र शास्त्र में बार-बार आते हैं (1 इतिहास 29:15; अय्यूब 8:9; भजन संहिता 102:11; 103:15, 16; 109:23; 144:4; सभोपदेशक 6:12; 8:13; यशायाह 40:6-8; याकूब 1:10, 11; 1 पतरस 1:24)। जो लोग सर्दी की बरसात के बाद फलस्तीन में गए हैं वे एकदम से निकल आने वाले फूलों की बहुतायत से परिचित हैं। पर जल्दी ही पूर्वी रेगिस्तान की गर्म हवाओं से जल्द ही झड़ जाते हैं।

आयतें 3-6. अय्यूब ने माना कि परमेश्वर की जांच के सामने कोई टिक नहीं सकता। हर किसी को यह कहना पड़ेगा कि नैतिक रूप से उसके सामने हम **अशुद्ध** हैं (भजन संहिता 143:2)। अय्यूब ने भी मनुष्य के जीवनकाल के ऊपर परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ होने का माना: **''मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं, और उसके महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है।''** भजनकार ने लिखा कि ''हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष के भी हो जाएं, तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्दी कट जाती है, और हम जाते रहते हैं'' (भजन संहिता 90:10)। अय्यूब ने परमेश्वर से इतना कहा कि वह **उससे अपना मुँह फेर ले कि वह आराम करे**। उसने अपने कठिन दिनों को **मज़दूर** के दिनों से मिलाया (देखें 7:1, 2)।

मनुष्य की तुलना वृक्ष से की गई (14:7-12)

[7]''वृक्ष के लिये तो आशा रहती है, कि चाहे वह काट डाला भी जाए, तौभी फिर पनपेगा और उससे नर्म नर्म डालियाँ निकलती ही रहेंगी। [8]चाहे उसकी जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए, और उसका ठूँठ मिट्टी में सूख भी जाए, [9]तौभी वर्षा की गन्ध पाकर वह फिर पनपेगा, और पौधे के समान उससे शाखाएँ फूटेंगी। [10]परन्तु मनुष्य मर जाता, और पड़ा रहता है; जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहाँ रहा? [11]जैसे नील नदी का जल घट जाता है, और जैसे महानद का जल सूखते सूखते सूख जाता है, [12]वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता; जब तक आकाश बना रहेगा तब तक वह न जागेगा, और न उसकी नींद टूटेगी।''

आयतें 7-9. अय्यूब ने विचार करते हुए कि क्या मनुष्य मरने के बाद फिर से जी सकता है, **वृक्ष** पर ध्यान दिया। वृक्ष के लिए यह सम्भव है कि यदि **वह काट डाला भी जाए** तो **उससे** नई **डालियां निकलती ही रहेंगी** (देखें यशायाह 11:1)। उसकी **जड़** अभी भी मज़बूत है, इसलिए यह फिर से **वर्षा की गन्ध** मिलने पर **पनप** सकता है।

आयत 10. ''परन्तु मनुष्य मर जाता, और पड़ा रहता है; जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहाँ रहा?'' पुराने नियम में इस प्रश्न का कोई पूरा उत्तर नहीं दिया गया। पवित्र शास्त्र में कब्र के आगे की अवस्था की कुछ धुंधली सी झलकें दी गई हैं। मूसा ने लिखा कि ''हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था फिर वह अलोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया'' (उत्पत्ति 5:24)। एलिय्याह नबी ''बवंडर में होकर स्वर्ग पर चढ़ गया'' (2 राजाओं 2:11)। दाऊद जानता था कि परमेश्वर ने उसके ''घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर'' चलने पर उसके साथ होना था (भजन संहिता 23:4)। परन्तु यीशु ने ''मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया'' (2 तीमुथियुस 1:10)।

आयतें 11, 12. अय्यूब ने निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य वृक्ष जैसा नहीं है। इसके बजाय वह **नदी** या **महानद** के जैसा है जो **सूखते सूखते सूख जाता है**। जब वह मृत्यु में **लेट जाता** है तब **वह न जागेगा, और न उसकी नींद टूटेगी**। अय्यूब को पुनरुत्थान का वह ज्ञान नहीं था जो आज हमें है। यीशु मसीह के द्वारा यह कितनी बड़ी आशीष है! उसने मृत्यु को नाश कर दिया है। उसने हमारे लिए विजय पा ली है (1 कुरिन्थियों 15:20-26, 50-57)।

''क्या मृत्यु में शांति है?'' (14:13-17)

[13]''भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता, और जब तक तेरा कोप ठंडा न हो जाए तब तक मुझे छिपाए रखता, और मेरे लिये समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता। [14]यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा? जब तक मेरा छुटकारा न होता तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता। [15]तू मुझे बुलाता, और मैं बोलता; तुझे अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा होती। [16]परन्तु अब तू मेरे पग पग को गिनता है, क्या तू मेरे पाप की ताक में लगा नहीं रहता? [17]मेरे अपराध मुहर-बन्द

थैली में हैं, और तू ने मेरे अधर्म को सी रखा है।''

आयत 13. भला होता (*mi yiththen, मि यिथथेन*) अय्यूब की पुस्तक में बार-बार मिलने वाला इच्छा का फार्मूला है (6:8; 19:23; 23:3; 29:2; 31:35)। अय्यूब ने परमेश्वर के **कोप** से जो सदा नहीं रहना था बचने की जगह ढूंढ़नी चाही (भजन संहिता 30:5; यशायाह 54:8)। जॉन ई. हार्टले ने समझाया, ''है कि अय्यूब के लिए पृथ्वी पर छिपने का कोई स्थान नहीं था इसलिए उसकी एकमात्र आशा अधोलोक [*sheol, शियोल*] में छिपने का स्थान है।''[1] अय्यूब ने चाहा कि परमेश्वर उसकी मृत्यु के बाद भी उसकी **सुधि** ले।

आयत 14. ''यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?'' यह प्रश्न बहुत पुराना है! मसीही व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर जोरदार ''हां!'' के साथ देता है। हम प्रभु में विश्वास के द्वारा फिर से जीएंगे। अय्यूब ने धैर्य से **आशा लगाए** रहना था कि उसका **छुटकारा** हो जाए यदि उसे **आशा** होती। संज्ञा शब्द ''छुटकारा'' (*ch^{a}lipah, चालिपाह*) का सम्बन्ध आयत 7 में क्रिया शब्द ''निकलती'' (*chalap, चलप*) से है। ''छुटकारा'' की जगह NIV में ''नवीकरण'' और NJPSV में ''बदलना'' है। अय्यूब ने चाहे शारीरिक पुनरुत्थान की सम्भावना को खारिज कर दिया था (14:11, 12), पर वह इसी विचार पर वापस आ गया। ''जीवन में वापस आने पर अय्यूब ने अपनी पुरानी, बीमार देह को त्याग देना था और उसे जीवन से भरी देह मिलनी थी।''[2]

आयतें 15-17. परमेश्वर के साथ अपनी पुरानी संगति की चाह करते हुए अय्यूब ने एक ऐसे दिन की कल्पना की जब परमेश्वर ने **अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा** करनी थी। जीवन का भविष्य परमेश्वर के हाथ में है। यह पद्य एक बेहतर दिन के लिए ''आशा के विरुद्ध आशा'' को व्यक्त करता है। अय्यूब ने इसे केवल धुंधला सा देखा।

अय्यूब का उदासी भरा निष्कर्ष (14:18-22)

[18]''निश्चय पहाड़ भी गिरते गिरते नष्ट हो जाता है, और चट्टान अपने स्थान से हट जाती है; [19]और पत्थर जल से घिस जाते हैं, और भूमि उसकी बाढ़ से काटकर बहाई जाती है; उसी प्रकार तू मनुष्य की आशा को मिटा देता है। [20]तू सदा उस पर प्रबल होता, और वह जाता रहता है; तू उसका चेहरा बिगाड़कर उसे निकाल देता है। [21]उसके पुत्रों की बड़ाई होती है, और यह उसे नहीं सूझता; और उनकी घटी होती है, परन्तु वह उनका हाल नहीं जानता। [22]केवल अपने ही कारण उसकी देह को दुःख होता है; और अपने ही कारण उसका प्राण अन्दर ही अन्दर शोकित रहता है।''

अय्यूब का यह भाषण निराशा के साथ समाप्त होता है। अय्यूब को अपने दुःख और पीड़ा से कोई राहत दिखाई नहीं देती थी।

आयतें 18-22. जिस प्रकार से प्रकृति की शक्ति **पहाड़** को नष्ट कर देती हैं उसी प्रकार से परमेश्वर **मनुष्य की आशा** को नष्ट कर देता है। पहले अय्यूब ने कहा, ''मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से अधिक फुर्ती से चलनेवाले हैं और निराशा में बीते जाते हैं'' (7:6)। अय्यूब को उस

दु:ख से निकलने की कोई सम्भावना नहीं लगी जिसने उसके शरीर को जकड़ रखा था। उसने यह मान लिया कि परमेश्वर ने **उस पर प्रबल** होकर **उसका चेहरा बिगाड़कर उसे निकाल** दिया है।

प्रासंगिकता

''हे परमेश्वर मुझे सिखा'' (अध्याय 14)

शिक्षा देने की एक पुरानी सूक्ति है जिसमें कहा जाता है, ''जितना आप सीखते हैं उतना ही और सीखने के लिए होता है, और जितना आप प्रश्न पूछते हैं, उतना ही और पूछने के लिए होता है।'' जीवन की कक्षा के छात्र के रूप में मैंने इस सूक्ति को सही पाया है। मैंने बहुत सी बातें पहले ही सीखी हैं पर अभी भी बहुत कुछ है जो मुझे सीखना है। आत्मिक रूप में, यही नियम लागू होता है।

अय्यूब परमेश्वर के वचन के लिखित रूप में दिए जाने से बहुत पहले हुआ। उसके पास बाइबल नहीं थी जैसा कि आज विश्वास के बड़े आत्मिक नियमों को सीखने के लिए हमारे पास है। परन्तु अपने बड़े कष्ट में भी उसने कठिन ठोकरों की पाठशाला से कई दर्दनाक सबक सीखे थे। अय्यूब ने सीखा था कि परिस्थितियां कैसे जल्दी से बदल सकती हैं। एक दिन वह शिखर पर था फिर अचानक त्रासदी की मार पड़ी और उसकी दुनिया उलट पुलट गई (1:1-20)। अय्यूब ने सीखा था कि परमेश्वर ही देता है और परमेश्वर ही ले लेता है और दोनों परिस्थितियों में उसे महिमा दी जा सकती है (1:21)। अय्यूब ने सीखा था कि जब लोगों को लगता है कि कुछ बुरा नहीं हो सकता, तभी बुरा हो सकता है (2:1-10)। उसने सीखा था कि मित्रों के होने का लाभ है (2:11-13)। उसने यह भी सीखा था कि अच्छी नीयत वाले मित्र ''निकम्मे वैद्य'' हो सकते हैं (13:4) जो कई बार बेतुकी बातें करते हैं (4:7; 8:1-4; 11:1-3, 12)।

अध्याय 14, में अय्यूब ने उन कुछ सबकों को साझा किया जो उसने सीखे थे (या सीख रहा था) और उसने कुछ प्रमुख प्रश्न भी पूछे जिनसे यह संकेत मिलता है कि वह परमेश्वर के बारे में और परमेश्वर से और जानना चाहता था।

''हे परमेश्वर, मुझे सिखा कि जीवन थोड़ी देर का है।'' अपनी पीड़ादायक परिस्थिति के खतरनाक होने से अय्यूब ने यह सीखा कि जीवन थोड़ी देर का है। उसने जीवन को एक फूल और छाया से मिलाया और फिर कहा कि परमेश्वर जानता है कि मनुष्य इस पृथ्वी पर कितने दिन तक रहेगा (14:2, 5)। भजन संहिता 39:4, 5 में दाऊद ने यह विनती की: ''हे यहोवा ऐसा कर कि मेरा अन्त मुझे मालूम हो जाए, जिस से मैं जान लूं कि कैसा अनित्य हूं! देख, तू ने मेरे आयु बालिश्त की रखी है, ... सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों तौभी व्यर्थ ठहरे हैं।'' भजन संहिता 90:10 में मूसा ने कहा, ''हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष के भी हो जाएं।'' हमारे प्रभु के भाई याकूब ने हम से यह विचार करने को कहा कि हमारे जीवन ''भाप के समान [हैं], जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है'' (याकूब 4:14)। अय्यूब ने यह सबक सीख लिया कि जीवन थोड़ी देर का है। मसीहियों के रूप में हमें भी यह सीख लेना आवश्यक है ताकि हम हर दिन का आनन्द उठाते हुए अवसर

को बहुमूल्य समझें (इफिसियों 5:16)।

''हे परमेश्वर मुझे सिखा कि जीवन खलबली भरा है।'' 5:7 एलीपज ने पहले ही इस सच्चाई को ब्यान किया था पर अय्यूब अपने जीवन में इसे भोग रहा था। हम पाप से भरे संसार में रहते हैं इसलिए जीवन परेशानियों से भरा है (यूहन्ना 16:33)। अय्यूब एक भला व्यक्ति था फिर भी वह पराजित, चोट खाया हुआ, और दु:खी व्यक्ति था। अय्यूब एक भला मनुष्य था फिर भी वह शोक से कुचला हुआ, फोड़ों से भरा और अपने मित्रों की सलाह से परेशान था। उन्होंने उसे तसल्ली देने के बजाय उसका विरोध किया था।

इस नियम को समझने पर हमें स्वर्ग को पाने की ओर भी चाह होती है। पौलुस ने इस प्रकार कहा है: ''हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। ... इस में तो हम कहराते, और बड़ी लालसा रखते हैं कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें'' (2 कुरिन्थियों 4:8, 9; 5:2)।

''हे परमेश्वर मुझे सिखा कि मृत्यु के बाद जीवन है।'' अय्यूब अपने आप में सुधार होते नहीं देख पाया इसलिए वह यह विचार करने लगा कि क्या मृत्यु के बाद जीवन है। युगों से लोग इस मुद्दे को समझने की कोशिश करते रहे हैं। अय्यूब ने कहा कि ''वृक्ष के लिये तो आशा रहती है, कि चाहे वह काट डाला भी जाए'' तो ''फिर पनपेगा'' और ''वर्षा की गन्ध पाकर वह फिर पनपेगा'' (14:7-9)। परन्तु अय्यूब के मन में अभी भी सवाल थे कि यह नियम मनुष्यों पर लागू होता है या नहीं (14:10)। हम यीशु के क्रूस और पुनरुत्थान के बारे में जानकर आशीषित हैं, परन्तु अय्यूब पुरखाओं के युग में रहता था। उसे यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में कुछ पता नहीं था इसलिए मरे हुओं के पुनरुत्थान का भी उसे ज्ञान नहीं था। आयत 14 में अय्यूब ने युगों पुराना प्रश्न पूछा, ''यदि मुनष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा।'' अय्यूब ने चाहे यह गम्भीर प्रश्न बहुत पहले पूछा था परन्तु आज भी यह उतना ही प्रासंगिक है जितना तब था जब इसे पूछा गया था। ''हे परमेश्वर मुझे सिखाया कि मृत्यु के बाद जीवन है!''

''हे परमेश्वर मुझे प्रतीक्षा करना सिखा।'' मृत्यु के बाद जीवन का अपना गम्भीर प्रश्न पूछने के बाद अय्यूब ने माना कि उसने अभी संघर्ष करते रहना था: ''जब तक मेरा छुटकारा न होता तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता'' (14:14)। उसने अपने प्रश्न के उत्तर के लिए तब तक राह देखनी थी जब तक उसका विश्वास देख न लेता। आज, अय्यूब का नाम ''धैर्य'' का पर्यायवाची है।

परन्तु हम में से बहुतों के लिए धीरज आत्मा का एक फल और मसीही गुण है जिस पर हमें काम करते रहना आवश्यक है। क्या आप यह कहेंगे कि आप एक धीरजवान व्यक्ति हैं क या आपको परमेश्वर की सेवा करना सीखने के लिए और धीरज चाहिए? बाइबल बताती है कि हमारे लिए प्रतीक्षा करना अच्छा है। विलापगीत 3:25, 26 कहता है, ''जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिये यहोवा भला है। यहोवा से उद्धार पाने की आशा रखकर चुपचाप रहना भला है।'' भजन संहिता 27 कहता है, ''हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर, और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल। यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!'' (भजन

संहिता 27:11, 14)। अन्य अवसरों पर दाऊद ने इसी बात को कहा (भजन संहिता 37:7; 40:1)। यशायाह ने लिखा, ''परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाई उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे'' (यशायाह 40:31)। ''हे परमेश्वर मुझे प्रतीक्षा करना सिखा।''

''हे परमेश्वर मुझे अपने स्वभाव के बारे में और सिखा।'' 1 पतरस 3:20 में पतरस ने कहा कि धीरज से प्रतीक्षा करना परमेश्वर की खूबी है। धीरज से बाट जोहना सीखकर अय्यूब ने परमेश्वर के स्वभाव के बारे में ओर सीखना था। रोमियों 15:13 हमें बताता है कि परमेश्वर ''आशा का दाता'' है। परन्तु अय्यूब 14:19 में अय्यूब उस समय की ओर वापस चला गया जब उसकी अधिकतर आशा जाती रही। पहले अय्यूब पूरे आत्मविश्वास से अपनी आशा परमेश्वर में रखने को समर्पित था (13:15), परन्तु यहां अय्यूब ने कहा, ''पहाड़ भी गिरते गिरते नष्ट हो जाता है, ... और पत्थर जल से घिस जाते हैं, ... उसी प्रकार तू मनुष्य की आशा को मिटा देता है'' (14:18, 19)। केवल इतना ही सच *नहीं*; अय्यूब की बात से यह पता चलता है कि परमेश्वर के स्वभाव के बारे में उसे अभी और सीखना आवश्यक था।

सांराश। अय्यूब ने जीवन की कक्षा में अपनी बदहाली से कई जबर्दस्त सबक सीखे थे। परन्तु परमेश्वर के मार्गों और उसकी इच्छा के बारे में उसे अभी और बहुत कुछ सीखना आवश्यक था। अय्यूब ने सीखना और परमेश्वर से जो उत्तम गुरु है, प्रश्न पूछना जारी रखा। अय्यूब की तरह हमें भी परमेश्वर को और बेहतर तरीके से जानने और अपने जीवनों के लिए उसके उद्देश्य को समझने की इच्छा रखनी चाहिए। एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमेंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 236. [2]वहीं। [3]''आशा के विरुद्ध आशा'' की अभिव्यक्ति अब्राहम के ''एक सौ वर्ष का'' होने और ''अपने मरे हुए से शरीर'' के बावजूद परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर कि वह ''बहुत सी जातियों का पिता'' होगा, उसके विश्वास को दर्शाता है (रोमियों 4:18, 19)। परमेश्वर ही है जो ''मरे हुओं को जिलाता है और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है कि मानो वे हों'' (रोमियों 4:17)।